International Journal of Information Movement *Vol. 9 Issue XI* *(March 2025)*
Website: www.ijim.in *ISSN: 2456-0553 (online)* **Pages 33-36**

विश्व का तोरण द्वार है हिन्दी

दीक्षा
जूनियर रिसर्च फेलो, पी.एच.डी
हिन्दी विभाग
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र
Email-id: drdiksha555@gmail.com

नेहा
जूनियर रिसर्च फेलो, पी.एच.डी
हिन्दी विभाग
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र
Email-id : dudyneha4@gmail.com

सारांश: तोरण द्वार केवल एक भौतिक प्रवेश द्वार ही नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक प्रतीक भी है, जो स्वागत, परंपरा और समृद्धि को दर्शाता है। हिन्दी को "विश्व का तोरण द्वार" कहना इसलिए उचित है क्योंकि यह न केवल भारत की भाषा है, बल्कि वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और साहित्यिक आदान-प्रदान का माध्यम भी बन चुकी है। हिन्दी भाषा भारत की सांस्कृतिक धरोहर, सभ्यता और मूल्यों को विश्वभर में पहुंचाने का कार्य कर रही है। मॉरीशस, फिजी, गयाना, अमेरिका, कनाडा जैसे कई देशों में हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति को अपनाया जा रहा है। हिन्दी धार्मिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, जिससे यह वैश्विक स्तर पर अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है। आधुनिक युग में इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से भी हिन्दी का प्रभाव बढ़ा है, जिससे यह भाषा वैश्विक संचार की एक महत्वपूर्ण कड़ी बन गई है। अतः हिन्दी को "विश्व का तोरण द्वार" कहना सार्थक है।

मुख्य शब्द: हिन्दी, तोरण द्वार, वैश्विक भाषा, भारतीय संस्कृति, साहित्य, धार्मिक ग्रंथ, आध्यात्मिकता, वैश्विक पहचान, भाषा संरक्षण, आधुनिकता, संचार माध्यम, प्रवासी भारतीय, राजभाषा, शिक्षा, सोशल मीडिया।

1.0 प्रस्तावना

तोरण द्वार का सीधा अर्थ - स्वागत द्वार है अर्थात् भारत प्रवेश का द्वार। यह भारत में इंडिया गेट के नाम से भी मशहूर है। तोरण द्वार एक प्रकार का सजावटी या प्रतीकात्मक प्रवेश द्वार होता है जो प्राचीन भारतीय वास्तुकला और संस्कृति में अपना अहम स्थान रखता है। साधारण अर्थ में हम यह भी कह सकते हैं कि तोरण द्वार विशेष रूप से धार्मिक सांस्कृतिक या सामाजिक आयोजनों के दौरान मन्दिरों महलों घरों या अन्य महत्वपूर्ण स्थानों के मुख्य द्वार पर लगाया जाता है। इसे संस्कारों और परम्परा के अनुसार सजाया जाता है यह स्वागत तथा समृद्धि का प्रतीक माना जाता है।

कहीं तोरणद्वार शहीदों के नाम पर है तो कहीं युगीन नेताओं अथवा सन्त दार्शनिकों के नाम पर, स्पष्ट है कि तोरण द्वार प्रत्येक देश में अवस्थित है।

हिन्दी रूपी जो वैश्विक तोरणद्वार है उस पर भी कोई बहरुपिया तोता बैठा हुआ है? क्या यही तोता प्रत्येक विदेशी की देह में घुस जाता है। जिसके कारण अधिकांश विदेशी आगत हिंदी से अच्छा व्यवहार नहीं कर पाते हैं?
हिन्दी तोरण द्वार पर आने वाले शक हो या कोल - किरात अथवा हूण अंग्रेज या फ्रांसीसी तक़रीबन सभी ने हिन्दी का उतना हित नहीं किया जितना करने की आवश्यकता थी। इन विदेशियों में से कई तो इसी देश के निवासी बनकर रह गए और कई हिन्दी पर ही काम करके अपने देश के विद्वान् बन गए। तोरण द्वार को तीन भागों में विभाजित किया गया है।

1. वैवाहिक/मांगलिक तोरण द्वार
2. सांस्कृतिक स्वागतार्थ तोरण द्वार

3. साहित्यक तोरण द्वार

2.0 विश्व का तोरण द्वार हिन्दी

हिन्दी ने न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी एक प्रमुख स्थान हासिल किया है इसके माध्यम से भारत की पहचान उसके मूल्य उसकी परम्परों आदि को विश्वभर में स्वीकार्यता मिल रही है जो इसे वास्तव में (विश्व का तोरण द्वार) बनाता है। सामान्य शब्दों में कहें तो हिंदी भाषा भारत की सांस्कृतिक सामाजिक और बौद्धिक धरोहर को दुनिया तक पहुंचाने का एक माध्यम भी है। इसलिए हिन्दी को विश्व का तोरण द्वार कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हिंदी भाषा सिर्फ भारत की पहचान नहीं है अपितु इसने विश्व में भी हिंदी भाषी लोगों को एक मंच प्रदान किया है और वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। तथा साथ ही में संयुक्त राष्ट्र संघ में स्थान पाकर विश्व में भी अपनी ज्योति फैलाई है।। हिन्दी संस्कृति और संस्कार लिए हुए विश्व का तोरण द्वार है।

केश है कंघा है, कच्छा कड़ा
सिख धर्म के हाथ कटार है हिन्दी।
बात करो दिन रात जहां मन,
चाहे बेतार का तार है हिन्दी।
पूजा से पूर्व पुरोहित हाथ,
सजाई हुई थार है हिन्दी।
संस्कृति और संस्कार लिए हुए,
विश्व का तोरण द्वार है हिन्दी।

3.0 हिन्दी को विश्व का तोरण द्वार कई कारणों से कहा जा सकता है -

3.0 संस्कृति और सभ्यता का संवाहक है हिन्दी

हिन्दी भारत की सांस्कृतिक और सामाजिक धरोहर का संरक्षित करने वाली प्रमुख भाषा है यह भारतीय संगीत साहित्य कला और सिनेमा का संवाहक है। इसके माध्यम से विश्व के अन्य हिस्सों तक भारत की सांस्कृतिक समृद्धि पहुंचती है। उदाहरण के तौर पर हम देखें तो कनाडा, मॉरीशस जैसे देशों में भारतीय त्योहारों पर्वों सांस्कृतिक कार्यक्रमो में बढ़ चढ़कर भाग लिया जाता है। मॉरीशस जैसे देश में भारतीय संस्कृति व भाषा का दर्पण देखते ही बनता है। मॉरिशस में भारतीय जीवन शैली और हिंदी भाषा को बढ़ावा देने का श्रेय प्रमुख धार्मिक, सामाजिक संगठन संस्थाओं और साहित्यकारों को जाता है।जिनके अभूतपूर्व योगदान के कारण आज हम मॉरिशस को भारतीय संस्कृति के अनुरूप मानते है। भाषा न केवल विचारों के आदान -प्रदान का साधन है बल्कि संपूर्ण परम्परा की संवाहक भी होती है। अतः मॉरिशस भारत की मिठास को संजोकर रखने वाला देश है।

3.2 भाषाई प्रभाव और वैश्विक उपस्थिति

हिंदी विश्व मेंसबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। लगभग 70 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं और यह संख्या हिन्दी को विश्व भर में एक प्रमुख भाषा के रूप में स्थापित करती है, इसके साथ ही हिंदी बोलने वालों की एक बहुत बड़ी संख्या भारत के बाहर भी फैली हुई है।
हिन्दी तोरण द्वार मॉरिशस, फ़िजी, सूरीनाम, गयाना, ट्रीनिडोड एवं टॉवेगो आदि देशों के साहित्यकारों का भी स्वागत कर रहा है जहां प्रवासी भारतीयों के कारण हिंदी समझी बोली और लिखी भी जा रही है। यही कारण है कि कोई हिन्दी को वैश्विक स्तर पर तृतीय स्थान पर देख रहे हैं तो कोई प्रथम स्थान पर।
विश्व के अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, स्वीडन, इटली, पोलैंड, रूस, चीन, कनाडा एवं श्रीलंका सहित 60 से अधिक देशों और 100 से अधिक विश्वविद्यालयो में पठन पाठन भी जारी है।

वर्तमान समय में अगर देखा जाए तो विदेशों में भी भारतीय प्रवासियों ने हिन्दी के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान और परंपराओं को जीवित रखा है।

3.3 विश्व स्तर पर हिंदी का आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व

हिन्दी को भारतीय धर्मों विशेषकर हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं सिख धर्म में आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व प्राप्त है धार्मिक ग्रंथ जैसे रामचरितमानस, भगवद्गीता और अन्य भक्ति साहित्य हिन्दी में उपलब्ध है, जिन्हें पूरे विश्व के लोग पढ़ते है। विश्व में अनेक धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं जो अपनी मान्यता के अनुसार पूजा - पाठ करते है तथा साथ में अन्य सभी धर्मों को समान महत्व देते है। उदहारण के तौर पर देखा जाए तो वाल्मीकि कृत रामायण हिन्दू धर्म का एक प्रमुख धार्मिक ग्रंथ है जो विश्व में भी बड़े उत्साह एवं भक्ति भाव से पड़ा जाता है। भारत में आने वाले पर्यटक विशेषकर तीर्थयात्री हिंदी के माध्यम से भारतीय धार्मिक स्थलों,ग्रंथों और दर्शन को बेहतर ढंग से समझ पाते है।हिंदी भाषा के माध्यम से वह भारतीय अध्यात्म एवं धार्मिकता से जुड़े हुए है।विश्व से लोग भारतीय धार्मिक स्थलों वृंदावन, केदारनाथ धाम,वैष्णो देवी प्रयाग महाकुंभ आदि स्थलों पर घूमने व दर्शन करने आते है।यहां से वह हमारी धार्मिक संस्कृति को समझते है एवं विदेशों में उसका प्रचार प्रसार भी करते है जिसके फलस्वरूप वर्तमान समय में देखा जाए तो क्रिसमिस का त्यौहार ईसाई धर्म के सबसे बड़े त्यौहारों में से एक है इस पर्व को भारत में भी बड़े धूमधाम के साथ मनाया जाता है।

राजभाषा के रूप में हिंदी का महत्त्व हिंदी भारत की सामाजिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम है तथा भारत के जीवन मूल्यों, संस्कृति और संस्कारों की सच्ची संवाहक,संप्रेषक और परिचायक है। यह राष्ट्र की पहचान और वाणी है। हिन्दी नेपाल, श्रीलंका, बर्मा और चीन के लिए सद्भाव की भाषा रही है तथा यूरोप और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के लिए प्रजातंत्र की भाषा है।
हिन्दी एशियाई संस्कृति में अपनी विशिष्ट भूमिका के कारण एशियाई भाषाओं से ज्यादा एशिया की प्रतिनिधि भाषा है। हिन्दी दुनिया में तीसरे स्थान पर सबसे ज्यादा बोली जाती है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी का बहुत अधिक महत्त्व है। इससे भारत की अधिकांश जनता लिख एवं पढ़ सकती है तथा लगभग समस्त जनता समझ सकती है।

"उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकारा जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोली जाती हो अर्थात् हिन्दी।"

4.0 हिन्दी को राजभाषा स्वीकृत करने पर विभिन्न विद्वानों के विचार

प्रमुख शिक्षाविद् भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था -"जो लोग अपनी भाषा संस्कृति और गौरव को नहीं जानते तथा जिन पर पश्चिमी सभ्यता का रंग चढ़ा है वह भारतीय नहीं भटके हुए मुसाफ़िर है।"

भारतेन्दु हरिशचंद्र के अनुसार -"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।"

गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है -"बंग्ला में लिखकर मैं बंग बन्धु तो हो गया लेकिन भारतबंधु तभी कहलाऊंगा जब हिन्दी में लिख पाऊंगा।"

राजा राममोहन राय -"इस समग्र देश की एकता के लिए हिन्दी अनिवार्य है।"

सी. राजगोपालाचार्य -"हिन्दी अहिन्दी लोगों के लिए ठीक उतनी ही विदेशी हैजितनी की हिन्दी समर्थकों के लिये अंग्रेज़ी।"

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए हम यह कह सकते हैं कि हमारी निज भाषा हिन्दी हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान है परिणामस्वरूप आज हिन्दी न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय हो रही है। लाखों लोग विश्वभर में हिन्दी बोलते और समझते हैं।इंटरनेट और सोशल मीडिया के युग में हिंदी का वर्चस्व बढ़ रहा है।
आधुनिकता और वैश्वीकरण के युग में जहां अंग्रेजी और अन्य भाषाओं का दबदबा है वहीं हिन्दी की महत्ता और

सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा का प्रतीक है इसलिए हिन्दी भाषा को विश्व का तोरणद्वार कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी ।

5.0 सन्दर्भ सूची -

1. जे. बी. पाण्डेय
2. रवीन्द्रनाथ ठाकुर
3. राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की प्रवाहिनी अंक (25)
4. भारतेन्दु, भारत - दुर्दशा
5. राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की प्रवाहिनी अंक (25)
6. वहीं।